IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

Models of Economic Development

Smt. Usha Thakre and Dr. Ramsingh Kushwaha
Department of Economics
Government College, Umranala, Chhindwara
Mandyanchal Professional University, Bhopal
ushathakre82@gmail.com and ram.kushwaha2008@gmail.com

विकास के विविध प्रारूप

प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व हमने यह जाना कि विकास की अवधारणा का तात्पर्य क्या है विकास के विभिन्न आयाम कौन–कौन से है। पक्ष को ही प्रधानता दी जाती है।

द्वितीय विश्वयुद्वोतर परिदृश्य में विकास और उससे जुड़ी बहसें सामने आयी है। बहुत हद तक विकास के विभिन्न प्रारूप इस बात पपर निर्भर करते है कि विकास का लक्ष्य एवं उसकी प्रक्रिया कैसी हो, यदि विकास की प्रक्रिया का माध्यम प्रतिस्पर्धा है तो वह पूँजीवादी दायरे में रह कर ही प्रारूप प्रस्तुत करेगी। इस पूँजीवादी प्रक्रिया की आलोचना भी काफी हुई है। विशेष तौर पर पिछड़े एवं विकासशील कहे जाने वाले देंशों के विद्वांनो ने इसकी आलोचना की है। इन सबसे अलग महात्मा गॉधी ने ग्राम आधारित विकास की नवीन अहिंसक संकल्पना प्रस्तुत की।

इस इकाई में हम विभिन्न विचारधाराओं से प्रेरणा प्राप्त कर विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विकास प्रारूपों का अध्ययन करेंगे।

विभिन्न प्रारूप एवं सिद्वांत :–

द्वितीय विश्वयुद्वोंत्तर परिदृश्य में एकरेखीय आर्थिक विकास प्रारूप (डब्ल्यू.डब्ल्यू.रोस्टोव), संरचनागत परिवर्तन सिद्वांत (आर्थर लुईस सिद्वांत) अंतरराष्ट्रीय निर्भरता (पॉल ए. बॉरन,पॉल स्वीजी,आंद्रे गुंदर फ्रेंक, वॉलरस्टीस) इत्यादि प्रतिपादित किए गए।

विकास की मुख्यधारा के अंतर्गत आर्थिक विकास को ही सर्वाधिक महत्ता प्रदान की जाती है। विस्तृत अर्थो में आर्थिक विकास से अभिप्राय राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्वि, निर्धनता एवं बेरोजगारी उन्मूलन तथा जीवन स्तर में सुधार इत्यादि से लिया जाता है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है। आर्थिक विकास में आय में वृद्वि के साथ जीवन प्रस्याशा, शिक्षा, आय वितरण आदि मुद्वे भी शामिल रहते है। आय में वृद्वि बचत को बढाती है बचत निवेश को बढाता है और निवेश उत्पादन गतिविधियों का मार्ग प्रशस्त करता है जो आर्थिक वृद्वि को बढाता है। इसमें कर संग्रहण भी बढता है जिससे सामाजिक कल्याण व्यय में वृद्वि होती है।

हेरॉड– डोमर प्रारूप

यह प्रारूप बचत स्तर और पूँजी उत्पादकता के परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था की वृद्वि दर की व्याख्या करता है। इस प्रारूप को स्वतंत्र तौर पर सर रॉय एफ.हैरॉड द्वारा 1939 में तथा इवसे डोमर द्वारा 1946 में प्रतिपादित किया गया। प्रारंभ में इस प्रारूप का उपयोग व्यापार चक्रो को विश्लेषित करने के लिए किया गया, आगे चलकर यह आर्थिक वृद्वि को व्याख्यायित करने के उपयोग में आने लगा। यह प्रारूप बताता है कि आर्थिक वृद्वि श्रम व पूँजी की मात्रा पर निर्भर है। अधिक निवेश पूँजी संचयन को जन्म देता है जो वृद्वि को बढ़ाता है। यह प्रारूप बताता है कि निवेश अनुकूल नीतियों का आर्थिक वृद्वि पर बहुत असर पड़ता है। यह प्रारूप विकसित देशों में हुई आर्थिक विकास की प्रक्रिया और संबंधित कारकों का विश्लेषण करता है। इस प्रारूप में आर्थिक वृद्वि की

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

प्रक्रिया में निवेश की महत्वपूर्ण भूमिका मानी गयी है। यह दो तरह से कार्य करता है। एक तो इससे आय में वृद्वि होती है और दूसरे पूँजी स्टॉक में वृद्वि होने से उत्पादन क्षमता में वृद्वि होती है। इस प्रारूप के अनुसार आर्थिक वृद्वि को प्राप्त करने का तरीका है बचत दर में वृद्वि पूँजी की सीमांत उत्पादकता में वृद्वि और हृासदर में कमी लाना । इस प्रारूप को निम्नानुसार चित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है–

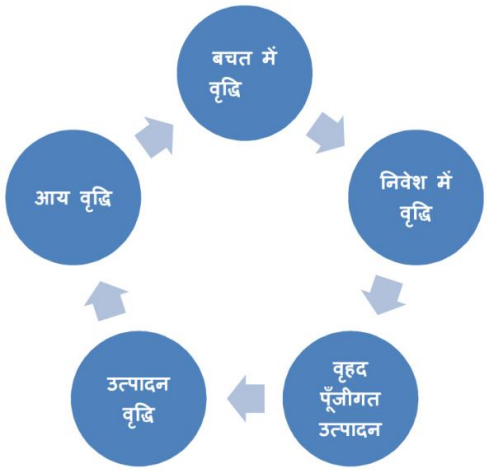

चित्र 1 : हैरॉड – डॉमर प्रारूप

यह प्रारूप बताता है कि किसी भी अर्थव्यवस्था की वृद्वि दर मुख्यतः दो बातों पर निर्भर है–

1. बचत का स्तर
2. निवेश की उत्पादकता

इस प्रारूप के जरिए इन्होने आय की वृद्वि की दर आवश्यक दर का पता लगाया जो अर्थव्यवस्था के लिए ठीक से काम करने के लिए जरूरी है। इसे ही इन्होने अभीष्ट वृद्वि दर कहा। शुद्व निवेश में वृद्वि होने पर वास्तवित आय तथा उत्पादन में वृद्वि होती है। पूर्ण रोजगार संतुलन के लिए जरूरी है कि वास्तविक आय तथा उत्पादन में उसी दर से वृद्वि हो जितनी दर से पूँजी होती है। पूर्ण रोजगार संतुलन के लिए जरूरी है कि वास्तविक आय तथा उत्पादन में उसी दर से वृद्वि हो जितनी दर से पूँजी स्टॉक की उत्पादन क्षमता बढ़ रही है। यही अभीष्ट वृद्वि दर है।इस सिद्वांत की महत्ता इस बात में है कि यह एक राष्ट[a]के आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर होने के कारणों और दर की व्याख्या करता है। इसमें यह कमी अवश्य है कि यह इस बात को विस्मृत कर देता है कि बचत व निवेश कई अन्य सामाजिक,राजनैतिक कारणों से भी प्रभावित होते है। इसके अतिरिक्त ब्याज दरों एवं कीमतों में परिवर्तन भी आय व निवेश को प्रभावित करते है।

प्रों. पॉल.एन.रोजेन्सटीन का सिद्वान्त :–

यह सिद्वान्त प्रों. रोजेन्सटीन द्वारा 1943 में प्रतिपादित किया गया। प्रो. रोजेन्सटीन का बड़ा धक्का सिद्वान्त यह स्पष्ट करता है कि विकासशील एवं अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं विकसित राष्ट[a] बनने के लिए अर्थव्यवस्था में बडे धक्के की जरूरत होती है । इसका अर्थ है कि इन देशो की अर्थव्यवस्थाओं को गति देने हेतु कुछ न्यूनतम मात्रा में निवेश अत्यन्त जरूरी है ताकि उन्हे इस स्थिति से निकाला जा सके।इन देशों की सरकारों को आर्थिक आधार मजबूत करने के लिए आधरभूत संरचसना – सड़क, बिजली,परिवहन,शिक्षा,स्वास्थ्य आदि पर न्यूनतम आवश्यक खर्च करना होगा। ऐसा करने पर न

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

केवल देशी निवेशक बल्कि विदेशी निवेशक भी अपनी पूँजी निवेश कर अर्थवयवस्था की गति को तीव्र करेंगे। अतः इन अर्थवयवस्थाओं में एक न्यूनतम गति में निवेश होने पर विकास का वातावरण बनता है।

यह सिद्वान्त में प्रो. रोजेन्सटीन औद्योगिक प्रगति के माध्यम से आर्थिक विकास की बात करते है कृषि पर ध्यान नही देते है जबकि विकासशील एवं अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं में इनकी महव्वपूर्ण भुमिका होती है। इन देशों में कृषि पर निवेश किये बिना अन्य व्यवसायो का विकास संभव नही हो पाता है। साथ ही इन देशों में पहले ही आय का स्तर कम होता है अत्एव निवेश के लिए पूँजी की कमी भी एक समस्या रहती है।

इन सबके बावजूद भी यह सिद्वान्त विकासशील एवं अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाओं के विकास के मार्ग की ओर बढने के एक महव्वपूर्ण उपाय को रेंखांकित करता है।

प्रों. आर्थर लुईस का सिद्वान्त :–

प्रों. आर्थर लुईस ने 1954 में अपना प्रसिद्व लेख इकॉनांमिक डेवलपमेंट विद अनलिमिटेड सप्लाईज ऑफ प्रकासित कराया । अपने इस लेख में श्रम की असिमित पूर्ति का सिद्वांर्त (अनलिमिटेड सप्लाईज ऑफ लेबर) का प्रतिपादन किया । इस सिद्वांत को लुईस सिद्वान्त या दोहरे क्षेत्र का प्रारूप (ड्यूल सेक्टर मॉडल) के नाम से भी जाना जाता है।

अपने महत्वपूर्ण काम में उन्होने बताया कि आर्थिक वृद्वि में वृद्वि श्रम के एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र में जाने पर होती है। उनके अनुसार एक विकासशील देश में प्रधानतः दो तरह के क्षेत्र पाये जाते है।

1. पूँजी वादी क्षेत्र
2. जीवन निर्वाह क्षेत्र

जीवन निर्वाह क्षेत्र में श्रम की जादा संख्या लगी रहती है जिसका प्रभाव छिपी बेरोजगारी,कृषि निर्भरता आदि मे देखने को मिलता है। कई बार श्रम की उत्पादकता नगण्य भी होती है। अर्थव्यवस्था के पूँजीवादी क्षेत्र में पूँजीपति अपने निवेश को उत्पादन मे लगाता है और उत्पादन में लगे सभी लोगों को भुगतान करता है। जीवन निर्वाह क्षेत्र में प्रति व्यक्ति आय कम होती है।

प्रो. लुईस के अनुसार एक अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास के लिए आवश्यक है कि जीवन निर्वाह क्षेत्र से श्रमिकों को हटा कर पूँजीवादी क्षेत्र में लगाया जाय। श्रम का यह स्थानान्तरण,तकनीकी प्रगति,निवेश,औद्योगीकरण आर्थिक विकास की गति को तीव्र करता है। इस क्षेत्र में श्रमिक की सीमांत उत्पादकता मजदूरी से अधिक होती है जो अतिरेक (सरप्लस) होती है। पूँजीपति इसी का निवेश करता है जिससे पूँजी रोजगार एवं आय बढती है। इसे इस प्रकार बताया जा सकता है–

चित्र 2 : श्रम की असीमित पूर्ति का सिद्धांत

सेलो– स्वॉन प्रारूप

यह प्रारूप प्रो. राबर्ट सोलो एवं टी.डब्ल्यू स्वॉन द्वारा 1956 में स्वतंत्र रू‍प से प्रतिपादित किया गया। यह प्रारूप उत्पादकता पूँजी संचयन जनसंख्या वृद्वि तथा तकनीकी प्रगति को दृष्टिगत रखते हुए दीर्घकालिक आर्थिक वृद्वि की व्याख्या करने का प्रयास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

करता है। यह प्रारूप हैराड–डोमर प्रारूप का विस्तार भी कहा जाता है। इस प्रारूप में हैरॉड–डोमर प्रारूप में उत्पादन के साधन में श्रम तथा परिवर्तित श्रम–पूँजी संबंधो को जोड़ा गया है।

ठस प्रारूप के अनुसार एक अर्थव्यवस्था अच्छी वृद्वि दर बनाए रखने के लिए तकनीकी प्रगति और श्रम शक्ति वृद्वि दर पर निर्भर करती है। साथ ही पूँजी तथा श्रम अनुपात में बदलाव लाकर उत्पादन में परिवर्तन लाया जा सकता है। जो आर्थिक विकास की प्रक्रिया में तेजी ला सकता है। सोलो–स्वॉन प्रारूप के आधार पर कहा जा सकता है कि अर्थव्यवस्था दीर्घकाल में श्रम शक्ति की वृद्वि दर के बराबर संतुलित विकास दर से प्रगति करती है। साथ ही यदि कभी अर्थव्यवस्था संतुलित विकास की पटरी से अलग हो जाती है।तो पूँजी–श्रम अनुपात व पूँजी उत्पाद अनुपात मे आवश्यक बदलाव लाकर उसे पटरी पर लाया जा सकता है।

प्रो.रोस्टोव का आर्थिक विकास की अवस्था सिद्वान्त :–

इस सिद्वान्त का प्रतिपादन प्रों डब्ल्यू रोस्टोव द्वारा 1960 में अपनी प्रसिद्व पुस्तक ‘द स्टेजेज ऑफ इकॉनॉमिक ग्रोथः ए नॉन कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो ’’ में किया गया । उन्होने बताया कि पिछड़े एवं अविकसित राष्ट्रो को विकसित राष्ट्र बनने मे उन्हे विभिन्न पॉच अवस्थाओं से गुजरना पडता है। प्रो. रोस्टोव के अनुसार हर राष्ट्र को इन आर्थिक विकास की पॉच अवस्थाओं से गुजरना पडता है।

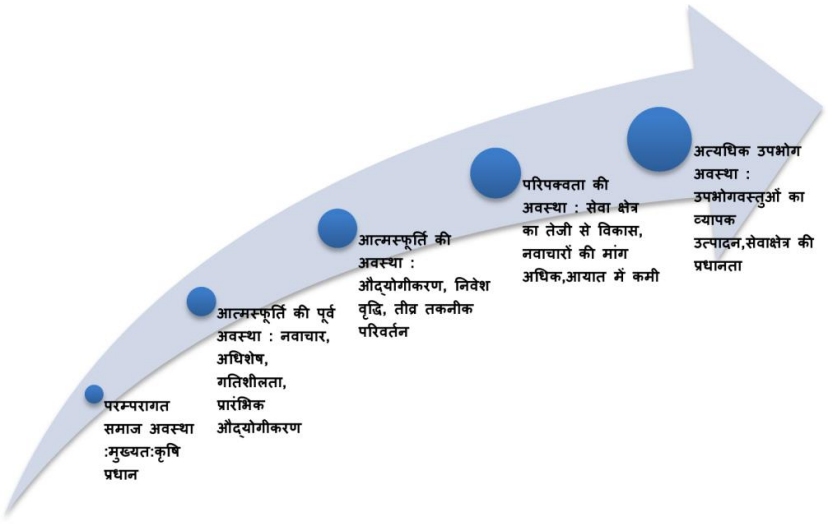

चित्र : 3 प्रो. रोस्टोव की आर्थिक वृद्धि की अवस्थाएं

डनके अनुसार पॉच अवस्थाएं निम्नानुसार है –

1. परम्परागत समाज अवस्था
2. आम्मस्फूर्ति की पूर्व अवस्था
3. आत्मस्फूर्ति की अवस्था
4. परिपक्वता की अवस्था
5. अत्यधिक उपभोग अवस्था

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

इन अवस्थाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से बताया जा सकता है–

1. **परम्परागत समाज अवस्था** :– यह बहुत पिछड़ी अवस्था होती है। मुख्य व्यवसाय खेती होती है। तकनीक सीमित होती है। यह एक बंद समाज होता है। पूँजी निर्माण की दर काफी नीची रहती है।
2. **आत्मस्फूर्ति की पूर्व अवस्था**– इस दूसरी अवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होने लगती है। समाज में गतिशीलता आने लगती है। नवाचारों को प्रोत्साहन मिलता है। उद्योगो की स्थापना होने लगती है परिवहन,व्यापार,शिक्षा,उद्योग आदि क्षेत्रो में गति आने लगती है। कृषि की उत्पादकता भी बढती है। तीसरी अवस्था क पृष्ठभूमि तैयार होने लगती है।
3. **आत्मस्फूर्ति की अवस्था** :– इस अवस्था में अर्थव्यवस्था में विकास को गति मिलती है निवेश बढ़ता है,प्रति व्यक्ति उत्पादन व आय में वृद्वि होती है। उद्योगो का विस्तार होता है। और पूँजी के लगातार निवेश से आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में लगातार बढ़ोतरी होती है। नवीन तकनीक से कृषि व उद्योग में उत्पादकता बढ़ती है। सामाजिक व राजनीतिक ढ़ाचा भी बदलता है। गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ा जाता है। रोस्टोव के अनुसार बताए गए कुछ देशों की आत्मस्फूर्ति अवस्था काल निम्नानुसार है–

देश	आत्मस्फूर्ति काल
ग्रेट ब्रिटेन	1783-1802
अमेरिका	1843-1860
जर्मनी	1850-1873
जापान	1878-1900
रूस	1890-1914
भारत	1952

4. **परिपक्वता की अवस्था** :– प्रो.रोस्टोव के अनुसार यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। इस अवस्था में निवेश दर 10 से 20 प्रतिशत रहती है। उत्पादन के साथ–साथ सेवा क्षेत्र तेजी से विकसित होने जगता है। कृषि में कार्यशक्ति का अनुपात कम होने लगता है। नवीन नवाचारों की ज्यादा मांग होने लगती है। रोस्टोव के अनुसार कुछ देंशों की परिपक्वता अवधि निम्नानुसार है–

देश	आत्मस्फूर्ति काल
ग्रेट ब्रिटेन	1850
अमेरिका	1900
जर्मनी	1910
रूस	1950
कनाडा	1950

5. **अत्यधिक उपभोग अवस्था** :– इस अवस्था में भौतिक कल्याण पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। उत्पादन एवं उपभोग स्तर बढ़ जाता है। अर्थव्यवस्था लगभग पूर्ण रोजगार की अवस्था की ओर अग्रसर होती है। इस अवस्था में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

समाज/देश प्रतिरक्षा सुरक्षा,समानता और कल्याण पर ज्यादा ध्यान केंद्रित करता है। साथ ही उपभोग वस्तुओं का अत्यधिक उत्पादन एवं उपभोग होता है। सार रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रों.रोस्टोव विकास के लिए निवेश की बहुत महत्वूर्ण भूमिका स्वीकारते है। पिछड़े एवं विकासशील देशों के विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है किवह निवेश के लिए पर्याप्त पृष्ठभूमि तैयार करे। अगर पिछड एवं विकासशील देश दूसरी अवस्था में पहुँच जाते है तो निवेश का प्रोत्साहन उनके विकास की गति को काफी तीव्र कर सकता है। इस लिहाज से रोस्टोव के अनुसार किसी देश के विकास में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विदेशी निवेश या मदद की भी काफी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। आलोचकों के अनुसार यह प्रारूप पश्चिमी औद्योगिक देशों को आधार मान कर बनाया गया है जो पिछड़े एवं विकासशील देशों में हूबहू लागू नही किया जा सकता है। इन अवस्थाओं का सही–सही अनुमान लगाना भी काफी कठिन होता है। आलोचकों ने प्रो. रोस्टोव के पूँजीवादी व्यवस्था में अगाध विश्वास और एकमात्र व्यवस्था की भांति देखने की आलोचना की। हर देश के अपने विकास पथ में उनके अनुसार बतायी गयी अवस्थाओं से गुजरना जरूरी नही है,हर देश का अपना विकास का एक रास्ता होता है। आलोचकों ने इस प्रारूप की आलोचना इस आधार पर भी की है कि हर देश का विकास लक्ष्य उच्च उपभोग अवस्था नही हो सकती है। फिर भी यह सिद्वांत निवेश की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करता है। विश्व के दो ध्रूवीय शीतयुद्व के माहैल में प्रो. रोस्टोव द्वारा प्रतिपादित यह प्रारूप बीसवी सदी का एक काफी प्रभावी और विवादित विषय रहा । राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार यह अमेरिका द्वारा साम्यवादी प्रभाव को कम करने के लिए एक प्रभावी सिद्वांत के रूप में प्रस्तुत किया गया।

निर्भरता सिद्वान्त :–

इन उपर्युक्त या कहा जाना चाहिए कि मूलतः पूँजीवादी प्रारूप एवं सिद्वांतों की आलोचना विभिन्न आलोचकों द्वारा की गयी। इनमें निर्भरता सिद्वांत बहुत महत्वपूर्ण है। यह सिद्वांत अपने स्त्रोत कार्ल मार्क्स,रोजा लक्जमबर्ग तथा लनिन इत्यादि से प्राप्त करता है। निर्भरता सिद्वांत को मुख्यतः दो भागो में विभाजित किया जा सकता है।

1. **लातिन अमेरिकी संरचनावादी** : इनमें प्रोबबिस्प,सेल्सो फुर्टाडो,एनिबाल पिंटो आदि प्रमुख नाम है।
2. **अमेरिकी मार्क्सवादी** : इनमें पॉल ए.,बारॉन स्वीजी, आंद्रे गुंदर फ्रेंक आदि प्रमुख नाम है।

निर्भरता सिद्वांत की मूल मान्यताएं निम्नानुसार है –

1. गरीब देश विकसित देशों को संसाधन (प्राकृतिक एवं मानवीय) तथा उत्पादित माल की खपत हेतु बाजार उपलब्ध कराते है जिसके बिना विकसित राष्ट्र के पैमाने पर बने नह रह सकते है।
2. धनी व सम्पन्न राष्ट्र अनेक तरीकों से निर्भरता बनाए रखते है। यह प्रभुत्व बनाने का तरीका आर्थिक, राजनैतिक, प्रचार–प्रसार, शिक्षा,संस्कृति,खेल,तकनीक इत्यादि कई माध्यम से हो सकता है।
3. गरीब देंशों द्वारा इस वर्चस्व को तोड़ने को तोड़ने के प्रयास को विकसित राष्ट्र अनुदान या सैनिक हस्तक्षेप से दबाने का प्रयास करते है।

आंद्रे गुंदर फ्रेक ने अपनी प्रसिद्व रचना कैपिटलिज्म एंड अंडरडवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका (1967) में तृतीय विश्व के विकासशील होने का कारण पूँजीवाद को बताया। यह पॉल बारॉन की प्रसिद्व पुस्तक द पॉलिटिकल इकॉनॉमी ऑफ ग्रोथ 1957 से काफी प्रभावित थे। उनके अनुसार इस पूँजीवादी व्यवस्था और शोषण है। फ्रेक के अनुसार सम्पूर्ण विश्व व्यवस्था मेट्रोपॉलिस (शहरी) और सेटेलाइट (सूदूर) संबंधो की श्रृंखला में बाट दी गयी है। शहरी क्षेत्र सुदूर क्षेत्रों का शोषण करते है। इनसे प्राप्त

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

अधिशेष (सरप्लस) को सुदूर क्षेत्रों में निवेश नही करते है जिससे इनका विकास नही हो पाता है। शहरी क्षेत्रों के विकास होने में ही सुदूर क्षेत्रों का विकास नही होना शामिल है।

विश्व व्यवस्था सिद्वान्त :–

इस सिद्वांत को इमैनुअल वालरस्टीन ने 1974 में प्रस्तुत किया वालरस्टीन के मुताबिक पूँजीवादी व्यवस्था तीन स्तरीय है –

- केंद्र राष्ट्र
- मध्य परिधि राष्ट्र
- परिधि राष्ट्र

केन्द्र राष्ट्र सशक्त व्यवस्था तंत्र बनाते है जो इस व्यवस्था को बनाए रखते है। परिधि राष्ट्र कृषि आधारित निम्न तकनीक वाले एवं संसाधनों के निर्यातक है। मध्य परिधि राष्ट्र के लिए केन्द्र का कार्य करता है। इस तरह देखा जाए तो परिधि राष्ट्र दोहरे शोषण का शिकार होते है। मध्य परिधि राष्ट्र दोनों के बीच तनाव कम करने का भी कार्य करता है। इससे ध्रुवीकरण नही हो पाता है। वालरस्टीन ने असमान आदान–प्रदान को इस अंतर का कारण बताया । परिधि एवं मध्य परिधि से सस्तें कच्चे संसाधन केंद्र राष्ट्र को जाते है और अधिक मूल्य पर इन राष्ट्रों के बाजारों में आते है। केन्द्र राष्ट्र तकनीक का उन्नयन कर अपना लाभ बढ़ाते है और इन राष्ट्रों का लगातार शोषण करते है।

पूँजीवाद विकास सिद्वांत के इन आलोजचकों ने इस पराश्रितता को दूर करने के कुछ उपाय भी प्रस्तावित किए है–

1. घरेलू उद्योग एवं उत्पादन को अधिकाधिक बढ़ावा दिया जाए। कच्चे माल के निर्यात के स्थान पर पक्के माल का निर्यात किया जाय।
2. देश में निर्मित होने वाली वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाया जाय या उन्हें कम किया जाए।
3. विभिन्न उत्पादन गतिविधियों से प्राप्त मुनाफें को देश में ही निवेश किए जाने के लिए राष्ट्रीयकरण के उपाय को लागू करना ताकि देश में रोजगार एवं उत्पादन गतिविधियों का निर्माण हो सके।

नव प्रतिष्ठित सिद्वान्त :–

1980 के दशक से यह विचार तेजी से पनपने लगा कि सरकारों को अर्थव्यवस्था में ज्यादा हस्तक्षेप नही करना चाहिए। मुक्त बाजार तीव्र एवं सफल विकास का अग्रदूत है। मुक्त बाजार की प्रतिस्पर्धा में यह क्षमता है कि वह संसाधनों के उचित आवंटन के जरिए आर्थिक विकास को तेज कर सकती है और उसे बनाए रख सकती है। इस सिद्वांत के अंतर्गत कई भिन्न–भिन्न मतह ै कि मुक्त बाजार को किस सीमा तक छूट प्रदान की जाए। इनमें से तीन सर्वप्रमुख है–

मुक्त बाजार दृष्टिकोण (फ्री मार्केट एप्रोच),

लाक–पंसद सिद्वांत (पब्लिक च्वाईस थ्योरी) और

बाजार– अनुकूल दृष्टिकोण (मार्केट फ्रेंडली एप्रोच)

इनमें से पहले दो मत यह मानते है कि सरकार का किसी भी तरह का हस्तक्षेप अर्थव्यवस्था के लिए खराब है। बाजार–अनुकूल दृष्टिकोण हालिया निर्मित दृष्टिकोण है जिसके निर्धारण में विश्व बैंक की प्रमुख भूमिका बतायी जाती है। यह दृष्टिकोण बताता है ि कवह मुक्त बाजार का समर्थक है परन्तु विकासशील देशों में बाजार की असमर्थता के कारण कोई गड़बड़ी होती है तो कुछ सरकारी हस्तक्षेप इन गड़बड़ियों को दुर करने के लिए आवश्यक है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

विकास का गॉधीवादी प्रारूप :–

विकास के गॉधीवादी प्रारूप का अर्थ है गॉधीजी के विचारों पर आधारित विकास दृष्टि। महात्मा गॉधी ने जिन सत्य और अहिंसा को जनमानस के दैनंदन जीवन का अंग बनाया उन्ही मूल्यों के आधार पर उनकी विकास दृष्टि को प्राप्त किया जा सकता है। हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है कि उन्होने एक अर्थशास्त्री की भॉति कोई प्रारूप प्रस्तुत नही किया लेकिन उनके द्वारा प्रतिपादित विचारों में एक अन्तर्निहित सूत्र अवश्य मौजूद है जिसके आधार पर विकास संबंधी विचारों को सूत्रबद्व किया जा सकता है।

महात्मा गॉधी ने तात्कालिक अर्थशास्त्र की कड़ी आलोचना की साथ ही उसे अमानवीय बताय। उनका तर्क था कि जब जीवन के समस्त क्षेत्रों का संचालन मानवीय मूल्यों के आधार पर किया जाता है तब अर्थशास्त्र या आर्थिक गतिविधियां इससे अलग कैसे रह सकती है। उसे भी अपनी समस्त कार्यप्रणाली में मानवीय मूल्यों को आधार बनाना होगा–"मै मानता हूॅ कि मै अर्थशास्त्र और नितिशास्त्र के बीच कोई सुस्पष्ट या किसी अन्य प्रकार का भेद नही करता। वह अर्थशास्त्र अनैतिक और इसलिए पापयुक्त है जो किसी व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को क्षति पहुॅचाता हो।"

अपने अर्थशास्त्रीय चिंतन में उन्होने विकास के पूॅजीवादी और साम्यवादी ढ़ाचें की घोर आलोचना की जा औद्योगीकरण और निरंतर कृत्रिम मांग उत्पादन पर आधारित था। इसके साथ मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन भी शामिल था। हमें यह याद रखना चाहिऐं कि जब गॉधीजी इन सब बातों पर विचार कर रहे थे तब उनके सामने एक ग्रामीण भारत और उपनिवेशवाद का संदर्भ था। आजादी की लड़ाई के साथ–साथ उनका प्रयास सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक आजादी का भी था। अतएव उनके विकास के विचार की पृष्टभूमि भी इन्ही बातों पर आधारित थी। यही कारण है कि उन्होने विकास के यूरोपीय रास्ते को नही अपनाया जो औद्योगीकरण,केद्रीकरण,पर्यावरण एवं मानवय शोषण पर आधारित था। उन्होने विकास के उस प्रारूप की बात कही जो भारत के लिए उपयुक्त हो –"मै ऐसे भारत की कल्पना नही कर रहा हूं जो निर्धनता का शिकार होगा और जिसमें अज्ञानी लोगो का वास होगा। मेरी कल्पना का भारत अपनी प्रकृति के अनुरूप निरंतर प्रगति करने वाला देश होगा।" अतएव उन्होने अपने विकास विचार में गांवो को मूल इकाई मान कर सम्पूर्ण अवधारणा बनायी। जिसे निम्नलिखित चित्र द्वारा बताया जा सकता है–

चित्र : 4 महासागरीय वलय

यह एक महासागरीय क्लय की तरह है जहा एक – दूसरे का शोषण नही अपितु सहयोग किया जाता है। गॉधीजी ने अहिंसा पर आधारित जिस विकास की बात की वह उनके स्वदेशी सिद्वांत में अभिव्यक्त होता है। स्वदेशी इसी महासागरीय वलय का सिद्वांत है। गॉधी जी ने स्वदेशी सिद्वांत को उनक विकास विचार का प्रस्थान बिन्दु कहा जा सकता है। उनके अनुसार – "स्वदेशी वह भावना है जो हमें दुरदराज के इलाकों को छोड़कर अपने समीपस्थ क्षेत्रों का उपयोग करने और उनकी सेवा करने तक सीमित करती है।"

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

इसका अर्थ है कि स्थानीय स्तर पर स्थानीय संसाधन एवं तकनीक के द्वारा विकास किया जाना चाहिए। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि गांवों को एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में तैयार किया जाए। यह इकाई उत्पादन, वितरण,रोजगार,खेती,ग्रामोद्योग,चरखा, खादी आदि तत्वों को समाहित करती है। गांव आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ परस्पर अन्योनाश्रित भी होंगे। इन्ही आत्मनिर्भर गांवों का समूह स्थानीय स्तर पर हुए उत्पादन, लाभ को निवेश के रूप में स्थानीय स्तर पर प्रयुक्त करता है जो अग्रिम रोजगार एवं उत्पादन का मार्ग प्रशस्त करता है। इस तरह आत्मनिर्भर गांवों की श्रंखला का निर्माण होता है। उन्होने इसे स्पष्ट करते हुए कहा –

"जीवन.... एक समुद्री वलय की तरह होगा सिजके केंद्र में व्यक्ति होगा जो सदैव अपने गांव के लिए पर मिटने के वास्ते तैयार रहेगा, गांव–गांव समूहों के वास्ते नष्ट हो जाने के लिए तैयार रहेगा और यह प्रक्रिया वहा तक चलती रहेगी जहा सम्पूर्ण विश्व एक जीवन का रूप धारण कर लेगाः सभी इस एक जीवन के अंग होंगे, वे कभी आक्रामक रूख नही अपनाएंगे बल्कि सदा विनम्रता का व्यवहार करेंगे और उस समुद्री वलय के ऐश्वर्य में भागीदार होंगे जिसकी वे अंगभूत इकाइयां है। इस समुद्री वलय की बाह्यातम परिधि के पास आंतरिक परिधि को कुचलने की शक्ति नही होगी बल्कि वह अपने अंदर की सभी परिधियों को शक्ति प्रदान करेगी और स्वयं उनसे शक्ति प्राप्त करेगी।"

ये गांव केवल कच्चे संसाधनों के निर्यातक एवं उत्पादक ही नही अपितु निर्माता एवं निर्यातक भी होंगे। अपनी जरूरत होने पर शेष गांवों से संसाधनों का आदान प्रदान समानता के स्तर पर करेंगे जहा शोषण के लिए स्थान नही होगा। यह याद रखना होगा कि आत्मनिर्भरता का अर्थ अन्य से कटाव या अलगाव नही बल्कि अन्य के साथ अन्योनाश्रित संबंध तथा उसके उत्थान में यथासंभव मदद करना है। इसमें पारस्परिक व्यापार एवं आदान–प्रदान शामिल है परन्तु इसका आधार शोषण नही आपसी सहयोग एवं मैत्री होगा।

गॉधीजी के विकास प्रारूप की निम्नलिखित विशेषताएं बतायी जा सकती है–

1. समाज के अंतिम व्यक्ति को केन्द्र में रखकर विकास का मार्ग चुनना।
2. विकास की प्राथमिकता सभी के लिए जीवन की बुनियादी जरूरतें उपलब्ध कराना।
3. आर्थिक विकास नैतिकता एवं अहिंसा की कसौटी पर खरा उतरना।
4. गांव आधारित विकास प्रक्रिया।
5. कृषि संबंधी पूरक उद्योंगो एवं ग्रामोद्योग को बढ़ावा दिया जाए।
6. विकास प्रक्रिया में उत्पादन,वितरण एवं लाभांश में सामाजिक न्याय का पालन हो।
7. विकेंद्रीकृत उत्पादन व्यवस्था।
8. ट्रस्टीशिप।
9. भारी उद्योगों का राष्ट्रीकरण।
10. पर्यावरण अनुकूल तकनीक का प्रयोग। इत्यादि

इस तरह यह कहा जा सकता है कि महात्मा गॉधीजी ने अपने देश एवं परिस्थितियों के मुताबिक की प्रक्रिया का चयन किया। उनका उद्देश्य यह था कि विकास प्रक्रिया में हर एक की भागीदारी हो और हर एक व्यक्ति – विशेषतः समाज में हाशिए पर रह रहे अंतिम व्यक्ति – लाभार्थी हो। यह दृष्टि उन्हें एक अहिंसक विकास प्रक्रिया की ओर ले जाती है। जो अपने आस–पास के वातावरण में आत्मनिर्भर बन कर उस प्रक्रिया को अपने आस–पास के वातावरण में आत्मनिर्भर बन कर उस प्रक्रिया को अपने वृहद समुदाय को सौपता है। यह प्रक्रिया वृहद उत्पादन (मॉस प्रोडक्शन) के स्थान पर अधिक लोगों द्वारा उत्पादन (प्रोडक्शन बॉय मॉसेज) को वरीयता प्रदान करता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

सारांश :–

द्वितीय विश्वयुद्वोत्तर परिदृश्य में विकास काफी चर्चा का विषय रहा है। 1990 से पूर्व ध्रुवों में बंटी विश्व व्यवस्था के दोनों ही पक्षों के विद्वानां ने अपने–अपने नजरिए से विकास को परिभाषित किया। पूॅजीवादी व्यवस्था ने अपने आप को उचित बताते हुए एकरेखीय एवं संरचनागत परिवर्तन के सिद्वांतो का प्रतिपादन किया और आलोचकों के अनुसार एक हद तक विकासशील एवं पिछड़े राष्ट्रों को अपना अनुगामी बनाने का प्रयास किया। अनुदान एवं हस्तक्षेप की नीति द्वारा विकासशील एवं पिछंडे राष्ट्रों के विकास को अवरूद्व किया गया। दूसरी ओर साम्यवादी एवं पूॅजीवादी के आलोचकों ने निर्भरता एवं विश्व व्यिवस्था सिद्वांत प्रस्तुत कर पूॅजीवाद व्यवस्था के शोषणकारी स्वरूप को सामने रखा। उन्होने स्पष्ट किया कि पूॅजीवादीव्यवस्था के बने रहने का आधार विकासशील एवं पिछड़े राष्ट्रों का शोषण ही है। इन दोनों ही दृष्टियों से अलग एक नया नजरिया महात्मा गॉधी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होने एक ओर तात्कालिक पूॅजीवादी व्यवस्था की आलोचना की जो औद्योगीकरण,वृहद उत्पादन,केंद्रीकरण,प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के शोषण पर आधारित है तो दूसरी ओर विकास के एक अहिंसक एवं विकेंद्रीकृत को प्रस्तुत किया जिसमें गांवों को विकास की मूलभूत इकाई माना गया।

बोध प्रश्न

1. हैरॉड–डोमर प्रारूप से आपका क्या तात्पर्य है।
2. प्रों.रोस्टोव द्वारा प्रतिपादित आर्थिक विकास की अवस्था प्रारूप को स्पष्ट कीजिए।
3. निर्भरता सिद्वांत से आप क्या समझते है।
4. महात्मा गॉधी की विकास दृष्टि पर प्रकाश डालिए।
5. आर्थिक विकास एवं स्वदेशी के बीच संबंधों को स्पष्ट कीजिए।
6. महासागरीय वलय की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
7. महात्मा गांधी के विकास प्रारूप की विशेषताओं का उल्लेख

संदर्भ एवं उपयोंग ग्रंथ :–

[1]. पीटर्स, जे.एन. डवलपमेंट थ्योरी : डिकन्सट्रक्शन्स/रीकन्सट्रक्शन्स,सेज पब्लिकेशन,लंदन,2001 लाटेन,जे.,थ्योरी ऑफ डवलपमेंट : कैपिटलिज्म, कलोनियलिज्म एंड डिपेडेन्सी,पोलिटी प्रेस,लंदन,1989 क्राउन,एम.जी एंड शेंटोन, आर.डब्ल्यू, डाक्ट्रीन्स ऑफ डवलपमेंट,राउटलीज,लंदन 1996 घोष,बी.एन.,गांधियन पॉलिटिकल इकॉनॉमी, एश्गेट पब्लिकेशन्स,हैम्पशायर, यूके,2007 नारायण,एस., रिलेवेन्स ऑफ गांधियन इकॉनॉमिक्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस,1970

[2]. शर्मा,आर., गांधियन इकॉनॉमिक्स,दीप एंड पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली,1997 यादव,बी.एस.,तबस्सुस, क. ,मसूद,एच., आर्थिक विकास एवं नियोजन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008 आचार्य, नंदकिशोर, सभ्यता का विकल्प – गांधी दृष्टि का पुनराविष्कार, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1995. ।